VOL- IX | ISSUE- V | MAY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

हरिशंकर परसाई एवं उनका व्यंग्य साहित्य

विनीता तिवारी
4 बी, आर. जी. कर रोड, श्यामबाजार
(काली बाड़ी मंदिर के विपरीत)
कोलकाता – 700004
ई-मेल - iamvinitatiwari955@gmail.com

साहित्य और समाज एक दूसरे से जुड़े होते है। रचनाकार अपने साहित्य में अपने तत्कालीन समाज के हर कोने से झाँककर उसकी सभी कुरुपताओं को प्रमुखता के साथ प्रतिबिम्बित करने का प्रयत्न करता है तभी साहित्य जीवंत और चेतनापरक बनता है। भारत जब स्वाधीन हुआ तब आर्थिक दृष्टि से विपन्न एवं साधनहीन था, हर तरफ से समस्याओं से घिरा हुआ था। इस स्थिति में देश के नेताओं का कर्तव्य था कि वे देश को विकास एवं प्रगति के पथ पर आगे बढ़ायें, देश के विकास के लिए अपना सर्वस्व आर्पित करें। साधन जुटायें, उत्पादन बढ़ायें, देश के धन का निःस्वार्थ भाव से सदुपयोग करें, देशभर में फैले भ्रष्टाचार, अराजकता, स्वार्थ लोलूपता को जड़ से मिटायें एवं लोककल्याण की नींव को सुदृढ करें। लेकिन हुआ बिल्कुल इसके विपरीत। जनता द्वारा चुने गये मंत्री अपना उत्तरदायित्व भूल गये और अपनी-अपनी स्वार्थ पूर्ति में लग गये। जिसका परिणाम यह हुआ कि देश में चारों तरफ बेरोजगारी अंधविश्वास का बोलबाला लगातार बढ़ता रहा, परिणामस्वरूप देश में अराजकता की स्थिति फैल गई।

व्यंग्य और हरिशंकर परसाई मूल रूप से एक-दूसरे के पूरक माने जा सकते हैं। हरिशंकर परसाई की रचनाएं जहां एक ओर देश के समाज, राजनीति, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में फैले विद्रुपताओं का चित्रण करता है तो वही दूसरी ओर इन भ्रष्ट समाज व्यवस्था से निकलने की कवायद भी करता है। कभी-कभी वैयक्तिक जीवन की अनुभूतियाँ मनुष्य को आत्म केन्द्रित बना देती हैं। हिन्दी व्यंग्य साहित्य के मूर्धन्य व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई के साथ भी यही हुआ था। अभावग्रस्त आर्थिक स्थिति एवं नैतिक दायित्व के बीच का अन्तराल परसाई जी की संवेदनशीलता को इस सीमा तक झकझोरता है कि आत्म सम्मोहन की स्थिति भंग हो जाती है और उन्हें एक व्यापक सामाजिक दृष्टि प्राप्त होती है, जिससे वो समाज के उस रूप को देखते है जो सामान्य मनुष्य की नजर से शायद ही दिखाई पड़े।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्यकारों में हरिशंकर परसाई जी अग्रगण्य है, उन्होंने मुख्य रूप से राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक आदि क्षेत्रों में व्याप्त कुप्रथाओं पर व्यंग्य किया है। इनके व्यंग्य में चेतना है। परसाई जी ने निबंध के साथ-साथ कहानी, उपन्यास, रेखाचित्र एवं संस्मरण इन सभी विधाओं में काफी सशक्तता के साथ प्रचुर मात्रा में लिखा है सभी विधाओं में उनकी प्रतिभा का परिचय समान रूप से मिलता है। परसाई जी ने अपने व्यंग्य साहित्य में पीड़ा, शोषण के खिलाफ अपनी आवाज बुलन्द की है। सोये हुए लोगों को झकझोरा है, वर्तमान परिवेश में व्याप्त असंगतियों, विद्रुपताओं खोखले आदर्शों को उखाड़ने का प्रयास किया है।

परसाई जी ने बुद्धिजीवि लोग अर्थात् अफसरों तथा उनके मातहतों की मनोवृत्ती पर चुटीला व्यंग्य अपनी रचनाओं में किया है, अफसरों के रंगढंग, चरित्रभ्रष्टता, अनैतिकता, रिश्वतखोरी के कुत्सित रूप का चित्रण कुछ इस प्रकार करते है - "बड़ा साहब स्टीम रोलर होता है, जो डिपार्टमेंट के बड़े छोटे का भेद मिटा देता है। सब समतल हो जाते है। क्योंकि सब डरे हुए होते है डर भेद मिटाता है। डर प्रेम पैदा करता है। डूबने से बचने के लिए साहब चपरासी के पैर इस तरह पकड़ लेता है जैसे वे भगवान के चरण हो चीता, बकरी और खरगोश के पास जाकर सलाह कर रहा है। बकरी चीते को शेर के 'डिनर' के लिए मेमना दे चुकी है यानी बच्चों का पेट काटकर साहब के स्वागत खर्च के लिए तनखा में से चंदा दे चुके है।"1 समाज में बुद्धिजीवी वर्ग अपनी बुद्धि का उपयोग समाज के हित में न करके चाटुकारिता करने में करता है जिसका चित्रण परसाई जी व्यंग्य के माध्यम से किया है।

तत्कालीन समाज में नैतिकता कोरा आडम्बर मात्र बनकर रह गई है अपने और दूसरों के लिये नैतिकता के प्रतिमान बदल जाते है। आज धर्म, श्रद्धा, विश्वास, आस्था आदि जैसे शब्द मृतप्राय हो चुके है। किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता है ऐसी स्थिति पर व्यंग्य करते हुए हरिशंकर परसाई लिखते है: "आज धर्म, श्रद्धा, विश्वास, आस्था, भरोसा आदि शब्द मृतप्राय हो चुके है जिस नेतृत्व पर श्रद्धा थी उसे नंगा किया जा रहा है और जो नया नेतृत्व आया है वह उतावली में अपने कपड़े खुद उतार रहा है।"2

परसाई जी की रचनाओं का आधार समाज है। उन्होंने समाज में व्याप्त हर प्रकार के व्यवस्था का विरोध किया है जो मनुष्य को परंपराओं से पृथक करती है। आज की नई पीढ़ी सम्मान करना भूलती जा रही है। वे लिखते है- "आज का श्रवणकुमार बदल चुका है। "आँखवाले की जवानी अन्धों को ढोने में गुजर जाती है। वह अन्धों के बताये रास्ते पर चलता है। कितनी काँवडे हैं- राजनीति में, साहित्य में, कला में, धर्म में, शिक्षा में। अन्धे बैठे हैं और आँखवाले उन्हें ढो रहे है।"3 हरिशंकर परसाई की रचनाओं में समाज का हर वर्ग समाहित है, चाहे वह निम्न वर्ग हो या मध्य वर्ग अथवा उच्च वर्ग, समाज का कोई भी वर्ग इनकी लेखनी से अछूता नहीं रहा है।

वर्तमान भारतीय समाज आदर्शहीन और मूल्यहीन होता जा रहा है। चारों ओर स्वार्थान्धता फैली हुई है। अनैतिकता का बोलबाला बढ़ रहा है। आज स्थिति यह है कि कोई किसी पर विश्वास नहीं कर सकता है। इसी बात को परसाईजी ने 'विकलांग श्रद्धा का दौर' नामक कहानी में तीखा प्रहार किया है - "और फिर श्रद्धा का यह दौर है देश मे? जैसा वातावरण है, उसमें किसी को भी श्रद्धा रखने में संकोच होगा। श्रद्धा पुराने अखबार की तरह रद्दी में बिक रही है। विश्वास की फसल को तुषार मार गया । इतिहास में शायद कभी किसी जाति को इस तरह श्रद्धा और विश्वास से हीन नहीं किया गया होगा। जिस नेतृत्व पर श्रद्धा थी, उसे नंगा किया जा रहा है। जो नेतृत्व आया है, वह उतावली में अपने कपड़े खुद उतार रहा है... कानून से विश्वास गया। अदालत पर ही शंका की जा रही है। डॉक्टरों को बीमारी पैदा करनेवाला सिद्ध किया जा रहा है। कहीं कोई श्रद्धा नहीं विश्वास नहीं।"4 परसाईजी ने इस कहानी के माध्यम से स्वार्थान्धता का वर्णन किया है जो हमे समाज में दिखाई देती है। समाज में स्वार्थ इतना बढ़ गया है कि कोई भी एक दूसरे की मदद करने के लिए आगे नहीं आता है प्रत्येक व्यक्ति पहले अपना स्वार्थ देखता है। इसी का वर्णन परसाई जी अपनी रचनाओं में निरंतर करते हैं।

परसाई जी ने हमारे देश में व्याप्त राजनीति व्यवस्था में फैले बुराईयों पर तीखा प्रहार करते है, व्यंग्य हकरते हुए वे कहते हैं कि देश को चलाने के लिए सरकार के नीतियों को नहीं बल्कि थोथे भाषणबाजी की जरूरत है। हमारे नेता यह समझते हैं कि भूखे लोगों को रोटी नहीं चाहिए, उनकी तृष्णा तो सिर्फ भाषण खाने से ही तृप्त होती है। अतः वे भूखी जनता को रोटी न देकर उसके मुँह में भाषण भर देते हैं। अब तो भाषण देना नेताओं की आदत बन गई है। जिस दिन भाषण नहीं देते हैं, उस दिन नींद नहीं आती है। परसाई जी ने 'मेनका का तपो भंग' नामक रचना में ऐसे भाषण देनेवले वालों की खिल्ली उड़ायी है- "वे प्रतिदिन दो-तीन सभाओं में मानव कल्याण पर भाषण दिये बिना सोते नहीं है। एक दिन रात को भैया साब - अपने कमरे में बैठे-बैठे रस्सी से गला घोंट रहे थे। प्राण निकलने ही वाले थे कि, उनका एक भक्त वहाँ आ गया। उसने पहले तो गला ढीला किया, फिर पुछा भैया साब आप गला क्यों घोट रहे थे? भैया साब ने कहा- "ऐसे गले का क्या करूँ जिसमें आज दिनभर एक भी पुष्पहार नहीं पड़ा।"5 चुनाव आते ही नारों और वायदों से आकाश भर जाता है चुनाव आयोग, चुनाव के दौरान हर बात के लिए आचार संहिता होती है, लेकिन नेता के अनुसार आचार संहिता तोड़ने के लिए ही होती है लोकसभा के उम्मीदवार को पच्चीस हजार और विधानसभा के लिए दस हजार धनराशि खर्च करने कि अनुमति होती है, लेकिन वास्तव में उनका खर्चा अधिक होता है जितना भी भ्रष्टाचार से कमाया है, उसे बाहर निकलवाते है नेता लोग अलग अलग नारों का प्रयोग कर - जनता को अपनी ओर खींचते है।

"गरीबी हटाओं, बेरोजगारी मिटाओ।"6

देश के चुनाव व्यवस्था पर हरिशंकर परसाई की कहानी "हम बिहार से चुनाव लड़ रहे है" में चुनाव प्रचार की स्थिति का यथातथ्य चित्रण किया गया है - "जैसे चुनाव नजदीक आता है, देश में तरह-तरह के आंदोलन होने लगते है इसके दो लाभ होते है- पहला तो यह कि अवसरवादी इसका लाभ उठाकर सत्ता में घूस जाते है दूसरा सत्ताधारी वर्ग खुश हुआ कि चलो जनता का ध्यान आंदोलन में बंट गया।"7 चुनाव आते ही देश के नेता बड़े-बड़े वायदे करते हैं लेकिन वही नेता सत्ता में आने के उपरांत लोगों से किए गए वायदे

भूल जाते हैं एवं अपनी जेब भरने में लग जाते हैं, हरिशंकर परसाई की रचनाएं इन सभी मुद्दों पर व्यंग करती नजर आती है।

आज के युग में ऐसी स्थिति है कि राजनीति में धूर्त, चालाक, ढोंगी, सत्ताधारी अधिक है लेकिन समाज द्वारा वही श्रद्धेय एवं पूजनीय कहलाते है, समाज में आम आदमी मरता है, तो उसका दु:ख कोई बड़ा नहीं होता है उनका मरना एक किड़े मकोड़े से ज्यादा नहीं होता। असली मृत्यु तो राजनीति के लोगों की होती है, क्योंकि उनके मरने पर शोक सभाएं होती है और सारे देश को छुट्टी मनाकर आँसू बहाने पड़ते है। हरिशंकर परसाईजी ने इसी को लक्ष्य बनाकर अपने निबंध 'छुट्टी वाला शोक' में कटु प्रहार किये है- "पर अगर पुलिस मंत्री मर जाये तो राष्ट्र फूट-फूटकर रोता है, हाय, रोज लाठी चार्ज करानेवाला मेरा लाड़ला चला गया। अब कौन ऐसा मिलेगा, जो इतनी रूचि से लाठी चार्ज करायेगा।"8 हमारे देश की ऐसी स्थिति है जहां लोगो की मृत्यु पर भी भेदभाव होता है। परसाई जी की रचनाएं इन सभी पाखण्डों की पोल खेलकर रख देती है।

व्यंग्यकार हरिशंकर परसाईजी ने सामाजिक यथार्थता को निकटता से देखा-परखा है, उसमें व्याप्त अनेक अंतर्विरोधों को अपने व्यंग्य का विषय बनाया है। परसाईजी मूलत: सामाजिक चेतना के रचनाकार हैं, इसलिए उनका कथा साहित्य में सामाजिक संदर्भों की प्रामाणिकता और चिन्तन की विश्वसनीयता बड़ी उर्जा के साथ चित्रित होती है और युग की सामाजिक, आर्थिक और नैतिक मूल्यों को हमारे सामने प्रस्तुत करती है। परसाईजी ने सामाजिक बुराईयों और जातिवादी रुढ़ियों के खिलाफ लम्बी लड़ाई लड़ी है और वे प्रत्येक स्तर पर होनेवाले अन्याय तक पहुँचते हैं। जन सामान्य का हित एवं कल्याण ही उनका मूल लक्ष्य है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हरिशंकर परसाई व्यंग्य विधा के रचनाकारों की सूची में उनका नाम प्रथम आता है। उनकी रचनाएं केवल समाज पर व्यंग ही नहीं करती बल्कि खोखली मान्यताओं, रूढ़ियों एवं भ्रष्टाचार आदि विषयों पर करारा प्रहार कर समाज को एक नई दिशा प्रदान करती है।

संदर्भ

1. परसाई रचनावली भाग- 1 - स. कमला प्रसाद, पृष्ठ 60
2. परसाई रचनावली भाग- 1 - स. कमला प्रसाद, पृष्ठ 298
3. व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई, डा. भरत पटेल, पृष्ठ 107
4. विकलांग श्रद्धा का दौर, हरिशंकर परसाई, परसाई रचनावली भाग- 2, पृष्ठ 230
5. परसाई रचनावली भाग- 1 - स. कमला प्रसाद, मेनका का तपोभंग, पृष्ठ 352
6. हिंदी निबंध साहित्य में व्यंग्य, उषा शर्मा पृष्ठ 161
7. हिंदी व्यंग का मूल्यांकन, डॉ. सुरेश महेश्वरी पृष्ठ 102
8. हिंदी निबंध साहित्य में व्यंग्य, उषा शर्मा पृष्ठ 173